उपाध्यक्ष महोदय : आप ने जो स्टेटमेंट दिया है, उस को पढ़िये ।

श्री मनी राम बागड़ी : उस के बाद श्री बी० पी० कोयराला, बूढ़ा शेर जो जेल काटते-काटते थक गया है, आज भी जेल काट रहा है . . .

उपाध्यक्ष महोदय : आप ने जो स्टेटमेंट दिया है, उसी को पढ़ें ।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं उसी को पढ़ रहा हूं ।

नैपाल की जनता ने हमेशा श्री जयप्रकाश नारायण डा० राम मनोहर लोहिया की रहनुमाई में अंग्रेजी राजशाही के खिलाफ भारतीय जनता की मदद की थी । जब हम लोग जेलों में थे तो आशा करते थे कि दुनिया भर के देश जनतंत्र के वास्ते हमारे देश में हमारी मदद करें । यदि हम इस मामले में दिलचस्पी नहीं लेते तो इस का मतलब होगा कि भारत नैपाल को किसी और मुल्क की गोद में डाल रहा है । आज नैपाली भाग कर भारत में आ रहे हैं और शरण ले रहे हैं । बड़े दुख की बात है कि नैपाल की जनता जब रोष प्रकट करने को दिल्ली स्थित नैपाली दूतावास में जा रही थी तो उन पर लाठी और अश्रु गैस छोड़ी गई ।

मैं आशा करता हूं कि भारत सरकार इस सम्बन्ध में कुछ कदम उठायगी । श्री जय प्रकाश नारायण खुद काम नहीं कर सकते हैं, परन्तु उन के सचिव के नेतृत्व में एक कमेटी बनी है । आप देश की जनता की भावनाओं को समझें और यह सदन नैपाल की जनता के साथ सहानुभूति दिखाये ।

एक शब्द मैं और कहना चाहता हूं—आप भी डा० लोहिया के साथ रहे हैं

उपाध्यक्ष महोदय : जो स्टेटमेंट आप ने दिया है, वही पढ़ सकते हैं ।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं उन को सलाम जरूर देता हूं—जो शहीद हुए हैं और मैं इस सदन से चाहूंगा कि आप लोग खड़े हो कर उन के लिए जरूर श्रद्धांजलि अर्पित कीजिए, एक मिनट के लिए मौन धारण कीजिए (**व्यवधान**) . .

(v) Report on the treatment of Dr. Ram Manohar Lohia in Willingdon Hospital.

श्री राजनारायण (रायबरेली) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आप की अनुकम्पा से एक बहुत ही आवश्यक विषय सदन के सम्मुख पेश कर रहा हूं और सदन के सम्मानित सदस्यों से निवेदन करता हूं कि आज जरा इस को ध्यान से सुनें । यह सदन एक प्रतिबिम्ब है, जो बाहर की घटनाओं को प्रतिबिम्बित करता है . . .

उपाध्यक्ष महोदय : आप का जो स्टेटमेंट है—उस को पढ़िये ।

श्री राज नारायण : श्री स्वास्थ्य मंत्री ने डा० राम मनोहर लोहिया से सम्बन्धित रपट सदन में रखी । यह रपट अधूरी है और सत्य पर पर्दा डालती है । सदन में रपट रखते समय ही मैंने अपने भावों को व्यक्त कर दिया था और आप को निवेदन किया था कि इस पर एक दिन बहस के लिए रखा जाये । बहस के लिए कुछ खास खास मुद्दों को आप की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं ।

1 यह विचित्र बात है कि ब्रिगेडियर लाल, सीनियर सर्जीगयन ने डा० लोहिया के यूरीनरी सिस्टम की जांच के कार्य को किसी खास सर्जन के जिम्मे नहीं किया । उस वक्त डा० पाठक सीनियर सर्जन थे और डा० दरबारी उन से दो स्तर नीचे थे ।

यह पहला सवाल है—आप से मेरा निवेदन है कि इस पहले सवाल का जवाब आप स्वास्थ्य मंत्री से इस सदन को दिलवायें ।

2 डा० फकीर चन्द ने डा० लोहिया के हाईपरटेंशन की बाबत डा० करोली से विचार-विमर्श किया और कहा कि इस समय हाईपर-टेंशन का आपरेशन करना ठीक नहीं । लेकिन डा० करोली ने डा० फकीरचन्द से कहा कि अब वह यानी डा० लोहिया अपनी सब से अच्छी हालत में हैं और अनस्थीसिया दिया जा सकता है और उस के बाद की हालत की जिम्मेदारी हमारी होगी ।

मेरा आपसे से विनम्र निवेदन है कि डा० करोली से पूछा जाये कि उन्होंने क्या जिम्मेवारी निबाही ?

उसके लिए आप को चिन्ता करने की जरूरत नहीं । मेरे विचार में यही बात डा० लोहिया को हम से जुदा करने का कारण बनी ।

यहां पर इस बात को साफ-साफ कहता हूं—अगर उस समय आपरेशन न हुआ होता तो डा० लोहिया हम से अलग न होते ।

3. आपरेशन की तारीख को एडवांस करने के कारणों के बारे में कमेटी चुप है, क्योंकि रिकार्ड से इस सम्बन्ध में कोई मदद नहीं मिली । असल में तो रिकार्ड का न मिलना भी इस बात को स्पष्ट कर देता है कि सच्चाई को जानबूझ कर छिपाया जा रहा है ।

(4) वास्तविक बात तो यह है कि डा० लोहिया की भर्ती नर्सिंग होम में 26 सितम्बर को होने वाली थी और आपरेशन की तिथि थी 5 अक्तूबर । जब दाखिल किया गया था तो डा० लोहिया स्वयं को असाधारण महसूस नहीं कर रहे थे और जो कुछ भी उनकी हालत खराब हुई, वह आपरेशन के कारण ही हुई ।

(5) यह रहस्य इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में नहीं खोला कि जब डा० लोहिया 26 सितम्बर को भर्ती होने वाले थे और 5 अक्तूबर को आपरेशन होने वाला था, तो डा० लोहिया 28 सितम्बर को भर्ती क्यों किए गए ? और जब 28 को भर्ती होने वाले थे तो आपरेशन 5 अक्तूबर को होना था परन्तु जब 28 को भर्ती किए गए तो आपरेशन 30 सितम्बर को ही क्यों कर दिया गया ?

इस में लिखा है कि 28 सितम्बर को भर्ती होते तो 5 अक्तूबर को आपरेशन होना । इतने दिनों तक उन के बाडी की सारी कंडिशन को ठीक किया जाता, मगर भर्ती 28 सितम्बर को किया और आपरेशन 28 सितम्बर को क्यों किया, इस का कोई कारण कहीं नहीं बताया गया है ।

(6) मुझे नर्सों से पता चला था और स्वास्थ्य मंत्री के बयान में भी है.

*(Interruptions)***

MR DEPUTY-SPEAKER: All the Members may note that when a Member is reading a matter under Rule 377, there should be no interruptions because he is only allowed to read what is contained in the statement and, therefore, any extraneous matter will go out of record. Even if you interrupt him, it will go out of record.

You proceed now.

श्री राज नारायण : श्रीमन्, मैं छोटी बात कह रहा हूं ।

मुझे नर्सों से पता चला था और स्वास्थ्य मंत्री के बयान में भी है कि डा० लोहिया के अन्दर से आपरेशन टेबल पर ही चार बोतल से अधिक खून बह गया और यह भी कि जब डा० लोहिया आपरेशन के बाद ले जाए जा रहे थे तो बराबर रास्ते भर खून गिरता रहा और जब वे बुलाये गए तो भी खून बराबर गिरता रहा । नर्सों ने मुझे यह बताया कि अन्तिम, टांका डा० लोहिया के आपरेशन का नहीं लगाया गया जिससे पाखाना और पेशाब लगातार गिरता रहा । और विशेषज्ञ डाक्टरों का भी यही कहना है कि डा० लोहिया की मृत्यु पाखाने के कीड़े से हुई । इस सदन के सदस्य जानें कि पाखाने का कीड़ा वहां आया कहां से ? वहां पाखाना कहां से पहुंचा इस के बारे में भी रिपोर्ट में कुछ नहीं कहा गया है । हम लोगों की मांग पर विलिंगडन अस्पताल के कार्य की सम्पूर्ण जांच के लिए एक कमेटी शांति पटेल की अध्यक्षता में बनी थी जिसने पूरी जांच की । उस कमेटी की रपट का भी सदन के पटल पर रखा जाना चाहिए क्योंकि उसमें हमारी गवाही हुई है ।

(7) जांच आयोग के पास दो हाईली रेपुटेशन के अधिकारी, जो कि करीब करीब हर वक्त डा० लोहिया के पास रहते थे । डा० एल० पी० अग्रवाल (डाइरेक्टर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली का भी एक पत्र उस आयोग की फाइल में है । उस पत्र को भी सम्भवत सदन के पटल पर नहीं रखा गया। डा० आर० के० मिश्रा जो डा० लोहिया के खास मित्र थे और जिनके लिए डा० लोहिया ने यह कहा था कि जब तक तुम चौबीस घंटे मेरे पास नहीं रहोगे मैं आपरेशन नहीं कराऊंगा उनकी भी रपट है । लेकिन उनकी रपट पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया, ऐसा क्यों ?

(8) सब से प्रमुख बात तो यह है कि डा० लोहिया आपरेशन के पक्ष में कतई नहीं थे । बल्कि वे आपरेशन के यथासम्भव विरुद्ध थे क्योंकि वे आपरेशन को हिंसा कहते थे । इसलिए कहते थे कि मैं आपरेशन नहीं कराऊंगा । मगर विलिंगडन अस्पताल के सुपरिन्टेण्डेण्ट ब्रिगेडियर लाल लगातार कई दिन तक जोर देते रहे और डा० लोहिया से आपरेशन कराने की स्वीकृति ले ली ।

(9) डा० लोहिया जैसे राष्ट्र नायक व्यक्तित्व के आपरेशन को एक जूनियर डाक्टर को सुपुर्द किया जाए और बाद में रिकार्ड से यह तक पता नहीं चले कि आपरेशन किस ने किया है ?

(10) मैं समझता हूं कि विश्व के इतिहास में यह एक अजीब ढंग का आयोग था जो कि जिस बात की जांच करने के लिए नियुक्त किया गया था उसकी तह तक वह नहीं पहुंच सका और यह तक पता नहीं लगा सका कि डा० लोहिया का आपरेशन किस ने किया ?

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि इस मसले पर सदन में पूरी बहस के लिए समय निश्चित किया जाए ।

(vi) Reported fast unto death by some Harijan employees of Gangaram Hospital

**Not recorded.